ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 153-157**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

जनपद बरेली के प्रशिक्षुओं की शाब्दिक भाषाई दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन

सर्वेश कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर– शिक्षाशास्त्र, बरेली कालेज, बरेली (उ0प्र0), भारत

Received-04.06.2024, Revised-10.06.2024, Accepted-16.06.2024 E-mail: skpedu1@gmail.com

सारांश: *किसी भी देश की उन्नति में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक जितना प्रभावशाली होंगे, देश उतना ही शक्तिशाली बनेगा। शिक्षकों की प्रभावशीलता कई कारकों; जैसे व्यावसायिक एवं विषयगत् ज्ञान, शिक्षक का व्यक्तित्व, अभिवृत्ति, व्यावसायिक अभिरुचि के साथ–साथ भाशाई दक्षता पर निर्भर करती है। मनुष्य अपने विचारों एवं भावों को व्यक्त करने तथा दूसरों के विचारों एवं भावों को समझने के लिए भाशा को अपनाता है। इस प्रकार भाषा पारस्परिक सम्प्रेषण की प्रक्रिया है। अंतःव्यैक्तिक एवं अंतर्व्यैक्तिक संप्रेषण शिक्षण प्रक्रिया का आधार है। शिक्षकों में संप्रेषण कौशल उनकी शाब्दिक भाषाई दक्षता पर निर्भर करता है। इसलिए भावी शिक्षकों की शाब्दिक भाषाई दक्षता का अध्ययन उनकी प्रभावषीलता के दृष्टिकोण से अत्यावश्यक हो जाता है। प्रस्तुत शोधपत्र में यह जानने का प्रयास किया गया है कि क्या बी. एड. प्रशिक्षुओं की शाब्दिक भाषाई दक्षता पर लिंग, अवस्थिति, संस्थान की प्रकृति, विशय संवर्ग, शैक्षिक योग्यता, अनुदेशन माध्यम भावी शिक्षकों पर प्रभाव पड़ता है अथवा नहीं? अध्ययन वर्णनात्मक शोध के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। न्यादर्श के रूप में बी. एड. पाठ्यक्रम में अध्ययनरत् 150 प्रशिक्षुओं को सरल यादृच्छिक न्यादर्श विधि से चुना गया और आँकडों के संग्रहण हेतु स्वनिर्मित शाब्दिक शाब्दिक भाषाई दक्षता परीक्षण का प्रयोग किया गया। बी. एड. प्रशिक्षुओं की शाब्दिक भाषाई दक्षता को लिंग, पृष्ठभूमि, शैक्षिक संस्थान की प्रकृति तथा शैक्षिक योग्यता प्रभावित करते हैं, जबकि विशय संवर्ग और अनुदेषन माध्यम का प्रभाव नहीं पाया गया।*

कुंजीभूत शब्द– ***भाषाई बुद्धि, शाब्दिक भाषाई दक्षता, शिक्षक प्रभावशीलता, व्यावसायिक अभिरुचि,यैक्तिक एवं अंतर्व्यैक्तिक संप्रेषण।***

किसी भी राष्ट्र की उन्नति उसकी शिक्षा प्रणाली पर निर्भर करती है। शिक्षकों के ऊपर ही शिक्षा प्रणाली की उत्कृष्टता का दायित्व होता है। शिक्षक राष्ट्र के भाग्य का निर्माता है तथा उसी के निर्देशन में विद्यालय की कक्षाओं में राष्ट्र का भाग्य फल–फूल रहा है (कोठारी आयोग, 1964–66)। शिक्षण व्यवसाय में सफल होने के लिए शिक्षकों को मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुप्रयोग का ज्ञान, विषयवस्तु पर स्वामित्व, नवीनतम सूचना एवं संचार तकनीकी की जानकारी का ज्ञान, प्रभावी संप्रेषण कौशल और भाषाई बुद्धिमत्ता का होना आवश्यक है। शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले कारकों मे निसंदेह शिक्षक की योग्यता, क्षमता और चरित्र सबसे अधिक महत्वपूर्ण है (राष्ट्रीय शिक्षा आयोग, 1964–66)। सुनियोजित शैक्षिक पुनर्गठन का सबसे महत्वपूर्ण घटक शिक्षक है, अर्थात उसके व्यक्तिगत गुण शैक्षिक योग्यता व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा विद्यालय और समुदाय में उसका सर्वोच्च स्थान है। वस्तुतः कोई भी शिक्षा अपने शिक्षकों के स्तर के अनुरूप ही ऊंची उठ सकती है (माध्यमिक शिक्षा आयोग, 1952–53)। जिस शिक्षक में भाषाई दक्षता जितनी अधिक होती है, वह अपनी विषयवस्तु को कक्षा में अपने विद्यार्थियों के समक्ष उतनी ही सुगमता और प्रभावशाली तरीके से हस्तांतरित करता है। भाषाई दक्षता को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक भाषाई बुद्धि है। भाषाई बुद्धि के संप्रत्यय का प्रतिपादन एक अमेरिकी मनोवैज्ञानिक हार्वर्ड गार्डनर द्वारा 1983 ई. में प्रकाशित प्रसिद्ध पुस्तक फ्रेम्स ऑफ माइंड में बहुबुद्धि के सिद्धांत के रूप में दिया था। इन्होंने प्रारंभ में बुद्धि के सात प्रकार बताए थे, जो इस प्रकार हैं– भाषाई शाब्दिक बुद्धि, तार्किक एवं गणितीय बुद्धि, शारीरिक और गतिकी बुद्धि, दृश्य स्थानिक बुद्धि, संगीतिक बुद्धि, अंतर्व्यैक्तिक बुद्धि, अंतःव्यैक्तिक बुद्धि और प्राकृतिक बुद्धि। प्रत्येक व्यक्ति में प्रयुक्त सभी प्रकार की बुद्धि पाई जाती हैं, किंतु सभी में इसकी मात्रा भिन्न–भिन्न हो सकती है (हार्वर्ड गार्डनर, 1983)। जिस व्यक्ति में जिस प्रकार की बुद्धि की अधिकता होगी उसका कार्य व्यवहार तथा पेशा उसी के अनुरूप होगा। उदाहरण के लिए एक खिलाड़ी में शरीर गतिक बुद्धि अधिक होती है, भाषाई बुद्धि व्यक्ति की भाषा पर स्वामित्व को दर्शाती है। ऐसा व्यक्ति जिसमें भाषाई बुद्धि की अधिकता होगी, वह शब्दों का चयन बड़ी सुगमता से कर लेता है, प्रभावशाली व्याख्यान दे सकता है, उसमें पढ़ने और पढ़ाने की क्षमता अधिक होती है (हार्वर्ड गार्डनर, 1983)। ध्वनियों और शब्दों के अर्थ और भाषा के कार्यो को समझने और इनका उपयोग करने की क्षमता को भाषाई बुद्धि कहते हैं। शाब्दिक या भाषाई बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति की उस क्षमता से होता है, जिसके द्वारा व्यक्ति ध्वनियों और शब्दों का शुद्ध उच्चारण कर सकता है, धारा प्रवाह बोल सकता है, अपने मौलिक विचारों को लिपिबद्ध कर सकता है तथा व्याकरण संबंधित त्रुटियों को ढूंढ कर उनको दूर कर सकता है। ऐसे व्यक्तियों में शब्द चातुर्य अधिक होता है तथा वह अपनी बात को दूसरों के सम्मुख बहुत प्रभावशाली तरीके से रखते हैं। उदाहरण के लिए इतिहासवेत्ता, उपन्यासकार, शिक्षक, वकील और नेता भाषाई बुद्धि में उच्च कोटि के होते हैं। व्यक्ति को शिक्षक बनने के लिए प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रवेश करता है। वहां पर शिक्षण संबंधी कौशलों को अर्जित करता है। शिक्षकों के विषय में दो धारणाएं प्रचलित हैं– पहली धारणा यह मानती है कि अच्छे शिक्षक जन्मजात होते हैंय जैसे महात्मा गांधी, गुरूदेव रविंद्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानंद, राजा राममोहन राय आदि। जबकि दूसरी धारणा यह है कि शिक्षक जन्मजात नहीं बल्कि तैयार किए जाते हैं, जो उनके प्रशिक्षण पर बल देती है। वर्तमान समय में शिक्षक बनने के लिए राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एन०सी०टी०ई०) द्वारा कुछ प्रशिक्षण पाठ्यक्रम निर्धारित किये गये हैं, जैसे बी.एड., बी.एल.एड., डी.एल.एड.। प्रशिक्षण संस्थानों में विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के माध्यम से भावी शिक्षकों में शिक्षण कौशलों का विकास करते हैं। इसके लिए उन्हें इंटर्नशिप भी करवाई जाती है। भाषाई दक्षता इन भावी शिक्षकों को शिक्षण कौशलों में पारंगत होने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। भाषाई दक्षता भावी शिक्षकों की अभिव्यक्ति

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

शैली, अन्तःव्यैक्तिक एवं अन्तर्व्यैक्तिक संप्रेषण तथा अन्य कौशलों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए भावी शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय में सफलता को जानने हेतु भाषाई दक्षता का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। इसी को दृष्टि में रखते हुए शोधकर्ता ने भावी अध्यापकों की भाषाई दक्षता से संबंधित समस्या का चयन किया।

समस्या कथन– जनपद बरेली के प्रशिक्षुओं की शाब्दिक भाषाई दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन।

प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण– प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग किया गयाः

प्रशिक्षु– प्रशिक्षुओं से तात्पर्य बी.एड. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों से है।

भाषाई दक्षता – भाषाई दक्षता से तात्पर्य हिंदी भाषा के सर्वनाम, उपसर्ग एवं प्रत्यय, मुहावरे एवं लोकोक्तियां, रस छंद अलंकार, विलोम शब्द एवं पर्यायवाची शब्दों, संधि एवं समास, शब्दों का उचित प्रयोग, शुद्ध वर्तनी का प्रयोग, साहित्य संबंधी क्षेत्रों में अर्जित कौशलों में निष्पादन से है, जिनका प्रयोग पढने, लिखने, सुनने और बोलने में किया जाता है।

शोध प्रश्न–

1. क्या प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता को लिंग, पृष्ठभूमि, भाषा माध्यम, शैक्षिक योग्यता, विषय संवर्ग एवं प्रशिक्षण संस्थान जैसे कारक प्रभावित करते हैं?

शोध उद्देश्य–

1. जनपद बरेली के ग्रामीण और शहरी प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. जनपद बरेली के पुरूष और महिला प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. जनपद बरेली के सरकारी और निजी प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. जनपद बरेली के स्नातक और परास्नातक शिक्षण योग्यता वाले प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. जनपद बरेली के कला और विज्ञान शिक्षण योग्यता वाले प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. जनपद बरेली के हिंदी और अंग्रेजी शिक्षण योग्यता वाले प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनायें–

1. जनपद बरेली के ग्रामीण और शहरी प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता में सार्थक अंतर नहीं है।
2. जनपद बरेली के पुरूष और महिला प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता में सार्थक अंतर नहीं है।
3. जनपद बरेली के सरकारी और निजी प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता में सार्थक अंतर नहीं है।
4. जनपद बरेली के स्नातक और परास्नातक शिक्षण योग्यता वाले प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता में सार्थक अंतर नहीं है।
5. जनपद बरेली के कला और विज्ञान शिक्षण योग्यता वाले प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता में सार्थक अंतर नहीं है।
6. जनपद बरेली के हिंदी और अंग्रेजी शिक्षण योग्यता वाले प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता में सार्थक अंतर नहीं है।

शोध अध्ययन का परिसीमन– प्रस्तुत शोध अध्ययन के क्षेत्र को निम्न बिंदुओं में परिसीमन किया गया हैः–

1. प्रस्तुत अध्ययन बरेली जनपद के शिक्षक प्रशिक्षुओं तक सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में बी.एड. प्रशिक्षुओं को ही सम्मिलित किया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में भाषाई दक्षता हेतु हिंदी भाषा के व्याकरण के प्रकरणों को ही लिया गया है।

शोध प्रविधि– प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है। इस अध्ययन में साधारण यादृच्छिक न्यायदर्श विधि का प्रयोग करते हुए बरेली जनपद के बी०एड० प्रशिक्षण संस्थानों – 02 सरकारी और 06 निजी संस्थाओं का चयन किया गया। चयनित सरकारी संस्थानों से 50 प्रशिक्षुओं और निजी संस्थानों से 100 प्रशिक्षुओं का चयन साधारण यादृच्छिक न्यायदर्श विधि का प्रयोग करते हुए किया गया।

उपकरण– इस अध्ययन हेतु शोधकर्ता ने एक स्वनिर्मित बहुविकल्पीय शाब्दिक भाषाई दक्षता परीक्षण का प्रयोग किया। प्रत्येक पद के उत्तर के लिए हिंदी भाषा में शाब्दिक या भाषाई दक्षता के आंकलन के लिए सात विमाएं निर्धारित की गई हैं, जिनका विवरण निम्नलिखित है–

क्रम संख्या	विमाएं
1.	सर्वनाम, उपसर्ग एवं प्रत्यय
2.	मुहावरे एवं लोकोक्तियां
3.	रस, छंद एवं अलंकार
4.	विलोम शब्द एवं पर्यायवाची शब्द
5.	संधि एवं समास
6.	शब्दों का उचित प्रयोग
7.	शुद्ध वर्तनी का प्रयोग
8.	साहित्य संबंधी ज्ञान

प्रत्येक सही उत्तर के लिए एक अंक तथा गलत उत्तर के लिए शून्य अंक प्रदान किया गया है। पहले परीक्षण में 61 प्रश्न लिए गए। तत्पश्चात् विशेषज्ञों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों के सुझावों के आधार पर 14 पदों को छोड़कर परीक्षण में कुल 43 पद सम्मिलित किए गए, जो कि उपरोक्त भाषाई दक्षता की विमाओं से संबंधित हैं।

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

उपर्युक्त उपकरण की सहायता से एकिध्त्रत किए गए आँकडों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन और टी– परीक्षण जैसी सांख्यिकीय प्रविधियों का उपयोग किया गया।

प्रदत्तों के आधार पर विश्लेषण एवं व्याख्या–

शोध उद्देश्य 1. जनपद बरेली के ग्रामीण और शहरी प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

तालिका–1

समूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी. परीक्षण मान
शहरी	99	22.20	6.10	2.53*
ग्रामीण	51	24.80	5.69	

*0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

व्याख्या एवं विश्लेषण– सारणी संख्या–1 में ग्रामीण और शहरी प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षुओं के मध्यमान को दर्शाया गया है। सारणी में ग्रामीण प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षुओं का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 22.20 एवं 6.10 है तथा शहरी प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षुओं का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 24.80 एवं 5.69 है। ग्रामीण और शहरी प्रशिक्षण संस्थाओं के बी.एड. प्रशिक्षुओं के मध्य टी–परीक्षण का मान 2.53 है। जो कि 0.01 सार्थकता मान पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना –''ग्रामीण और शहरी प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता में सार्थक अंतर नहीं है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

शोध उद्देश्य 2. जनपद बरेली के सरकारी और निजी प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

तालिका–2

समूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी. परीक्षण मान
सरकारी	50	27.62	4.97	8.40*
स्ववित्त पोषित	100	20.52	4.83	

***0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक**

व्याख्या एवं विश्लेषण– सारणी संख्या–2 में सरकारी और निजी प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता के मध्यमान को दर्शाया गया है। सारणी में सरकारी प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 27.62 एवं 4.97 है तथा निजी प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षुओं का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 20.52 एवं 4.83 है। सरकारी और निजी प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता के मध्य टी–परीक्षण का मान 8.4 है जो कि 0.01 सार्थकता मान पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना –''सरकारी और निजी प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता में सार्थक अंतर नहीं है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

शोध उद्देश्य 3. जनपद बरेली के कला और विज्ञान विषय संवर्ग योग्यता वाले प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

तालिका–3

समूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी. परीक्षण मान
विज्ञान	68	23.51	5.93	1.20
कला	82	22.35	5.88	

व्याख्या एवं विश्लेषण– सारणी संख्या–3 में कला और विज्ञान विषय संवर्ग शिक्षण योग्यता वाले प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता के मध्यमान को दर्शाया गया है। सारणी में कला विषय संवर्ग शिक्षण योग्यता वाले प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 23.51 एवं 5.93 है तथा विज्ञान विषय संवर्ग शिक्षण योग्यता वाले प्रशिक्षुओं का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 22.35 एवं 5.88 है। कला और विज्ञान विषय संवर्ग शिक्षण योग्यता वाले प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता के मध्य टी–परीक्षण का मान 1.20 है। जो कि 0.1 सार्थकता मान पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना – ''सरकारी और निजी प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता में सार्थक अंतर नहीं है'' को स्वीकृत किया जाता है।

शोध उद्देश्य 4. जनपद बरेली के स्नातक और परास्नातक शिक्षण योग्यता वाले प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

तालिका–4

समूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी. परीक्षण मान
स्नातक	70	21.47	6.17	2.78*
परास्नातक	80	24.08	5.32	

'0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

विश्लेषण एवं व्याख्या– सारणी संख्या–4 में स्नातक और परास्नातक शिक्षण योग्यता वाले प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता के मध्यमान को दर्शाया गया है। सारणी में स्नातक शिक्षण योग्यता वाले प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 21.47 एवं 6.17 है तथा परास्नातक शिक्षण योग्यता वाले प्रशिक्षुओं का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 24॰08 एवं 5.32 है। स्नातक और परास्नातक शिक्षण योग्यता वाले प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता के मध्य टी–परीक्षण का मान 2.78 है, जो कि 0.01 सार्थकता मान पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना –''स्नातक और परास्नातक शिक्षण योग्यता वाले प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता में सार्थक अंतर नहीं है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

शोध उद्देश्य 5. जनपद बरेली के पुरूष और महिला शिक्षक प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

तालिका–5

समूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी. परीक्षण मान
पुरूष	53	24.94	6.04	3.25*
महिला	97	21.76	5.55	

'0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

व्याख्या एवं विश्लेषण– सारणी संख्या–5 में पुरूष और महिला प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता के मध्यमान को दर्शाया गया है। सारणी में पुरूष प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 24.94 एवं 6.04 है तथा महिला प्रशिक्षुओं का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 21.76 एवं 5.55 है। पुरूष और महिला प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता के मध्य टी–परीक्षण का मान 3.25 है। जो कि 0.01 सार्थकता मान पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना –''पुरूष और महिला प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता में सार्थक अंतर नहीं है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

शोध उद्देश्य 6. जनपद बरेली के हिंदी और अंग्रेजी अनुदेशन माध्यम वाले शिक्षक प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

तालिका–6

समूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी. परीक्षण मान
हिंदी माध्यम	139	22.83	5.85	0.44
अंग्रेजी माध्यम	11	23.64	6.90	

व्याख्या एवं विश्लेषण– सारणी संख्या–6 में हिंदी और अंग्रेजी अनुदेशन माध्यम वाले प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता के मध्यमान को दर्शाया गया है। सारणी में हिंदी अनुदेशन माध्यम वाले प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 22.83 एवं 5॰85 है तथा अंग्रेजी अनुदेशन माध्यम वाले प्रशिक्षुओं का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 23.64 एवं 6.90 है। हिंदी और अंग्रेजी अनुदेशन माध्यम वाले प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता के मध्य टी–परीक्षण का मान 0.44 है। जो कि 0.1 सार्थकता मान पर सार्थक नहीं है। अतः

शून्य परिकल्पना–''हिंदी और अंग्रेजी अनुदेशन माध्यम वाले प्रशिक्षुओं की भाषाई दक्षता में सार्थक अंतर नहीं है'' को स्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्षः–शोध निष्कर्ष– प्रस्तुत शोधकार्य में शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये हैः–

1. बी.एड. प्रशिक्षुओं की शाब्दिक भाषाई दक्षता पर पृष्ठभूमि का प्रभाव पडता है। ग्रामीण बी.एड. प्रशिक्षुओं की शाब्दिक भाषाई दक्षता उच्च पाई गई। पाटीदार एवं पाटीदार (2012) के अध्ययन में भी इसी प्रकार के परिणाम प्राप्त हुए थे।
2. बी.एड. प्रशिक्षुओं की शाब्दिक भाषाई दक्षता पर लिंग का प्रभाव पडता है। पुरूष बी.एड. प्रशिक्षुओं की शाब्दिक भाषाई दक्षता उच्च पाई गई।
3. बी.एड. प्रशिक्षुओं की शाब्दिक भाषाई दक्षता पर प्रशिक्षण संस्थान की प्रकृति का भी प्रभाव पडता है। सरकारी प्रशिक्षण संस्थानों के बी.एड. प्रशिक्षुओं की शाब्दिक भाषाई दक्षता उच्च पाई गई।
4. बी.एड. प्रशिक्षुओं की शाब्दिक भाषाई दक्षता पर शैक्षिक योग्यता का प्रभाव पडता है। परास्नातक शैक्षिक योग्यता वाले बी.एड. प्रशिक्षुओं की शाब्दिक भाषाई दक्षता उच्च पाई गई।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

5. बी.एड. प्रशिक्षुओं की शाब्दिक भाषाई दक्षता पर विषय संवर्ग का प्रभाव नहीं पड़ता है। पाटीदार एवं पाटीदार (2012) के अध्ययन में भी इसी प्रकार के परिणाम प्राप्त हुए थे।
6. बी.एड. प्रशिक्षुओं की शाब्दिक भाषाई दक्षता पर अनुदेशन माध्यम का प्रभाव नहीं पड़ता है। पाटीदार एवं पाटीदार (2012) तथा रानी (2009) के अध्ययन में भी इसी प्रकार के परिणाम प्राप्त हुए थे।

सुझाव– प्रस्तुत अध्ययन प्रशिक्षुओं की शाब्दिक भाषाई दक्षता की त्रुटियों के निदान में सहायक सिद्ध हो सकता है। यह अध्ययन भाषा शिक्षण सम्बन्धी प्रचलित शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम बी.एड. की पाठ्यचर्या में परिमार्जन की आवश्यकता को भी इंगित करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. तिवारी, बी. एन. (1971). भाषा चिंतन। इलाहाबादः स्मृति प्रकाशन।
2. शर्मा, आर. वी. (2002). भाषा एवं समाज (पंचम संस्करण)। नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।
3. श्रीवास्तव, आर. एन. (1992). भाषा शिक्षण। नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन।
4. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005)। नई दिल्लीः एन. सी. ई. आर. टी.।
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986). मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
6. भटनागर सुरेश (1997). आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें। मेरठः लाल बुक डिपो।
7. कौल, लोकेश (1998) शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली। नई दिल्लीः विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि.।
8. कपिल, एच. के. (2004). रिसर्च मेथड्स इन बिहैबरल साइंसेस। आगराः भार्गव भवन।
9. बेस्ट, जे. डब्ल्यू एवं काह्न, जे. वी. (2006), रिसर्च इन एजुकेशन (9वाँ संस्करण), नई दिल्लीः प्रेंटिश हॉल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड।
10. गार्डनर, एच. (2011) फ्रेम्स ऑफ माइंडः द थ्योरी ऑफ मल्टीपल इंटेलीजेंसेंज (तृतीय संस्करण)। यू. केः बेसिक बुक्स।
11. पाटीदार, एम. एवं पाटीदार, जे. के. (2012), बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों की हिंदी लेखन में वर्तनीगत षुद्वता पर षिक्षण माध्यम, वर्ग, जेंडर एवं पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन। आधुनिक भारतीय शिक्षा। अंक–1। नई दिल्लीः एन.सी.ई.आर.टी.। पृष्ठ 117–128.
12. यादव, आर. जे. (2016). भावी अध्यापकों की भाषाई दक्षता का आकलनः माध्यमिक शिक्षा के संदर्भ में। डॉक्टोरल थीसिस। शिक्षा संकाय, बी. एच. यू., वाराणसी। Retrived from the website- http://hdl.handle.net/10603/476649 on 05/082024.
13. रेयान, के. एवं कूपर, जे. एम. (2012). दोज व्हू कैन, टीच (तेरहवाँ संस्करण)। वाड्सवर्थ पब्लिसिंग को. इंक.।
14. राजेश्वरी, आर. (2009), प्रोफाइल ऑफ टीचिंग काम्पिटेंसी अमंग प्रास्पेक्टिव सेकेंडरी टीचर्स। Retrieved from the website: www.shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/27893 on 10/08/2024.
15. तारकेष्वर, जी. (2012), बी. एड. प्रषिक्षणार्थियों की हिंदी अभ्यास षिक्षण की व्यावहारिक समस्यायें एवं समाधान। आधुनिक भारतीय शिक्षा। अंक–2। नई दिल्लीः एन.सी.ई.आर.टी.। पृष्ठ 87–97।
16. पांडे, पी. एन. (2021) सामान्य हिंदी (चौंतीसवां संस्करण)। प्रयागराजः नालंदा पब्लिसिंग हाउस।
17. गुडए सीण् वीण् य1959द्धण् डिक्शनरी इन एजुकेशन। न्यूयोर्क रू मैग्राहिल बुक कोण्ए इंकण।
18. राष्ट्रीय शिक्षा आयोग रिपोर्ट (1964–66), शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली।
19. माध्यमिक शिक्षा आयोग रिपोर्ट (1952–53), शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली।
20. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020). शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

Webliography-

- http://www.lib.uni.dissertation.com
- http://www.eurojournals.com
- http://www.https://shodhganga.inflibnet.ac.in

*****